[illegible]

3

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

मि ॥ ३३ ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ३३ ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] १८
[illegible]
[illegible] ॥
[illegible]

दैत्यौघ्नी त्रिपुरा [illegible] मङ्गलकारिणी
म् ॥ ३१ ॥ भक्तानुग्रह [illegible]
कमलामे [illegible] ज्योति [illegible]
[illegible] ज्ञैः ॥ सर्वकला [illegible]
[illegible] त्रैलोक्य [illegible]
[illegible] मालिनी ॥ ३२ ॥ [illegible]
[illegible] कपाल [illegible] मेखला [illegible]
[illegible] ॥ कर्पूर [illegible]
[illegible] विपक [illegible]
[illegible] ॥ ३३ ॥ गायत्रि
[illegible]
[illegible] ॥ [illegible]

𑆪𑆰𑇀𑆛𑆴𑆫𑆴𑆠𑆨𑆑𑇀𑆠𑆶𑆠𑆩𑆠𑆥𑆳𑆬𑆵𑆫𑆁𑆓𑆰𑇀𑆛𑆵𑆱𑇀𑆩𑆸
𑆫𑇀𑆟𑆨𑆴𑆩𑆫𑆨𑆳𑆢𑇀𑆓𑆴𑆫𑆴𑆠𑆥𑆠𑆢𑇀𑆢𑆼 𑇆 𑇓𑇓 𑇆
𑆮𑆸𑆑𑆳𑆪𑆩𑆠𑇀𑆫𑆮𑆴𑆟𑆳𑆠𑇀𑆠𑆫𑇀𑆥𑆪𑆴𑆤𑆩𑆵𑆯𑇀𑆮𑆂
𑆥𑆸𑆰𑇀𑆜𑆼𑆂 𑆨𑆓𑆮𑆠𑇀𑆑𑆬𑆳𑆈𑆠𑇀𑆑𑆸𑆰𑇀𑆛𑆑𑆩𑆨𑆷𑆑𑆼
𑆤𑆳𑆑𑆼𑆲𑆑𑆬𑆥𑆈𑆫𑆮𑆱𑇀𑆤𑆈𑆓𑆮𑆨𑆠𑇀𑆫𑆴𑆓
𑆱𑇀𑆠𑇀𑆫𑆵𑆮𑆥𑆱𑇀𑆩𑆨𑆮𑆴𑆣𑆴𑆑𑆸𑆈𑆜𑆲𑆮𑆣𑇀𑆮𑆂 𑇓𑇗
𑆈𑆫𑆴𑆣𑆳𑆠𑇀𑆫𑆴𑆫𑆫𑆴𑆈𑆢𑆥𑆬𑆼𑆑𑆫𑇀𑆥𑆵𑆈𑆲𑆳
𑆪𑆼𑆫𑆈𑆲𑆈𑆫𑆈𑆱𑆴𑆠𑆴𑆨𑆴𑆩𑆣𑇀𑆫𑆶𑆪𑆼𑆣𑇀𑆫𑆿 𑇆
𑆔𑆂𑆨𑆖𑆩𑆫𑆶𑆟𑆳𑆈𑆫𑆴𑆟𑆱𑇀𑆠𑇀𑆫𑆴𑆈𑆮𑆳𑆱𑇀𑆠𑇀𑆫𑆴𑆰
𑆪𑆁𑆨𑆳𑆢𑇀𑆮𑆨𑆳𑆣𑆫𑆶𑆑𑆫𑆶𑆈𑆝𑆮𑆱𑇀𑆥𑆫
𑆠𑇀𑆫𑆳 𑇆 𑇓𑇔 𑇆 𑆩𑆳𑆨𑆵𑆑𑆫𑆨𑆶𑆑𑆫𑆨𑆠𑇀𑆫𑆴𑆠𑆳
𑆈𑆪𑆮𑆣𑆳𑆂 𑆯𑇀𑆫𑆼𑆰𑇀𑆜𑆴𑆱𑆷𑆫𑆳𑆩𑆨𑆮𑆟𑆳𑆞𑆴

[illegible]

समाधिनतः ॥ यः सप्रयाधिकर
क[illegible]पहे रग्नीनवद्यापि
[illegible]लोक[illegible]भवेव ॥ ३० ॥ सवाल
[illegible]पिपरं पसभामवत्रिकम्नीर
समभलोक[illegible]यत्नपत्नाः ॥ प्रद्
तरा[illegible]तयमीयपमारविसद्व
य[illegible]मवत्माविनवायराग्नी ॥ ३१
वीतत्ववस्तुविवद[illegible]यादय
[illegible]यन्नतयानगतंभूतभाः
[illegible]यनविगारभूकरश्चराग्नी
[illegible]मत्रगदि[illegible]भूत[illegible]मह्न
भी ॥ ३२ ॥ वीतत्ववस्तुविवद[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

१३

सुग्रीवः ॥ कृत्वेमं [illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ ३० ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

सोतिसमाङ्घ्रिभूः पद्मः पतेद्माप।
लितत्रभयिनेत्रभागनमा॥ श्रुश्रोपियः
कल्पोनपापतमोविनासिनि हेमित
१५ दभक्तोनिभ्रूल्लासाभिगम्भीमा॥ [illegible]
भ्राल्लेनककमनतत्त्रपतवलेप
पामेनगन्ध्रकवलद्वशधैतिगात्रैः।
यस्मिंजितहृतत्रमेसितभागसमूग
स्रीभमांवितत्रयाम्बुगाशभूक्त्लमा
[illegible]॥ पद्मजगनस्तगतोपवनेत्रग
ग॰ सगभायसांङ्घ्रिघगनमूतनैत्रगसू
मुं॰ कीम्मलीकमलानैह्रभमककमत्रेः।
१३ गम्भीमनत्रकनवोत्थिमपाक्षफेम्भा

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

गं. सु. १७

यो ऽस्मात्स्माकृतपक्षीपडउभगभवि
वाञ्छितवारयञ्जठज्ञठयाविता।
स्त्री ॥ १३ ॥ पर्हेठिखंठिरपीञ्च
रमभग्नि भुरंभक्तिघणिगश्चेय
सन्निभेवा । फ्चारिगञ्चसठरञ्च
मेमूर्गर्गःस्त्रीविज्ञामयञ्चठज्ञ
गानामयंभा ॥ १४ ॥ रम्भाम्भापंठव
शिविभापायगाञ्चेद्रस्फञ्जेवारव
ग० विञ्चरकृठेगठागाः ॥ भागस्त्रृध्व
स्तु० गावनाञ्चरभाक्ष्ञ्चविगस्त्रीविघ्रल
३० ...श्रिवञ्चविविहभा ॥ १५ ॥ भाहूं
पञ्चभभपयाञिमवाञ्चवज्ञभञ्च

𑆮𑆓𑆮𑆫𑆴𑆩𑆩𑆢𑇀𑆫𑆴𑆠𑆑𑆵𑆫𑇀𑆠𑆴𑆯𑇀𑆫𑆵𑆩𑆳𑆤𑆂 𑇅
𑆪𑆼𑆫𑆴𑆢𑆩𑆖𑇀𑆖𑆠𑆮𑆳𑆢𑇀𑆫𑆶𑆩𑆫𑆢𑆑𑆩
𑆑𑆼𑆫𑆳𑆢𑇀𑆫𑆶𑆩𑆳𑆠𑆫𑆱𑆛𑆖𑆳𑆫𑆴𑆥𑆳𑆑𑆴𑆩𑆳
𑆩𑆳𑆩𑆳 𑇆𑇑𑇘𑇆 𑆱𑆘𑆳𑆱𑆑𑆩𑆪𑆠𑆵
𑆥𑆴𑆩𑆴𑆥𑆴𑆮𑆵𑆥𑆳𑆪𑆳𑆢𑆪𑆴𑆫𑆁𑆛𑆑𑆴
𑆥𑆳𑆥𑆥𑆠𑇀𑆤𑆥𑆳𑆁𑆑𑇀𑆫𑆩𑆳 𑇅 𑆢𑆫𑆳𑆛𑆁
𑆑𑆴𑆫𑆠𑆴𑆑𑆑𑇀𑆫𑆭𑆣𑆭𑆩𑆑𑇀𑆫𑆴𑆫𑆁𑆑𑆼𑆥𑆴
𑆫𑆱𑆩𑆥𑆩𑆳𑆥𑆶𑆠𑆯𑇀𑆫𑆫𑆱𑇀𑆭𑆵 𑇆𑇕𑇒𑇆
𑆫𑆱𑇀𑆭𑆶𑆫𑆴𑆫𑆼𑆭𑆓𑆠𑆥𑆳𑆛𑆭𑆳𑆫𑆠𑆢
𑆮𑆴𑆯𑇀𑆫𑆑𑆫𑆼𑆩𑆩𑆴𑆫𑆩𑆾𑆮𑆴𑆱𑆳𑆢𑇀𑆫𑆵𑆲𑆁
𑆥𑆳𑆛𑆪𑆩𑆵𑆩𑆪𑆫𑆩𑆳𑆫𑆠𑆪𑆳 [illegible]
𑆱𑇀𑆫𑆵𑆛𑆪𑆳𑆥𑆠𑆑𑆼𑆱𑆶𑆩𑆳𑆩𑆴𑆮𑆴𑆢𑆩𑆳 𑇅 𑇑𑇓

कमयत्री भक्ति ॐ भक्ति मी ॐ श्रीक
गली मम्उ ऐं क॰ गभा ॥ ह्रीं जा
ग्रिगा विभ्रुउ कालकूपा भक्तार
गङ्गी मग॰ वृसमः ॥ ७ ॥ माङ्के
इयाजीउग ँ ममञा भविमाश्रु
यामिँगेप भव ह्मामा ॥ भुकमयत्री
श्रविमञ्ज माङ्केमेइ हूगङ्गी मग
॰ भूपञामा ॥ ८ ॥ विङ्गवउंमाश्रु
त्रिविकिंगम विभञ्जम ङ्के पगमा
जारिभ्रागा ॥ श्रुस्त्रपधांमञ्जंगेगे
पलैञ्चिभञ्ज गङ्गी मग॰ भूपञा ॥
महिगागाउङ्गउउङ्गपलै श्रावैप

[illegible]

𑆲𑆳𑆨𑆳𑇆 𑆥𑆚𑇀𑆘𑆳𑆕𑇀𑆓𑆱𑆼𑆤𑆳𑆪𑆪𑆠𑇀𑆫𑆵𑆁𑆨

𑆫𑆲𑇀𑆫𑆳𑆁 𑆲𑇀𑆫𑆳𑆁𑆮𑆵𑆫𑆤𑆳𑆲𑇀𑆫𑆵𑆁𑆱𑆫𑆬𑆷𑆲𑆶𑆩𑆂

𑆩𑆷𑆫𑇀𑆣𑇀𑆤𑆴𑆥𑆠𑆴𑆲𑆳𑆤𑆟𑆳𑆥𑆣𑇀𑆫𑆾𑆪𑆲𑇀𑆫𑆵𑆁𑆠𑆱𑆾

𑆱𑆤𑆳𑆱𑇀𑆠𑆶𑆣𑆠𑆫𑆁𑆱𑆨𑆼𑆣𑇀𑆫𑆼𑇆 𑆨𑆳𑆓𑇀𑆫𑆾𑆠𑆱𑆳

𑆫𑆲𑇀𑆩𑆨𑆲𑇀𑆫𑆼𑆥𑆫𑆠𑆁𑆲𑇀𑆫𑆳𑆁𑆥𑆣𑆳𑆲𑇀𑆫𑆵𑆁𑆱

𑆫𑆬𑆷𑆲𑆶𑆩𑆂𑇆 𑇑𑇗 𑇆 𑆱𑆤𑆳𑆩𑆴𑆮𑆳𑆓𑇀𑆫

𑆩𑆴𑆨𑆲𑇀𑆫𑆨𑆲𑆳𑆨𑆳𑆓𑇀𑆫𑆪𑆠𑇀𑆫𑆵𑆤𑆳𑆥

𑆤𑆴𑆓𑆳𑆣𑆨𑆳𑇆 𑆨𑆥𑆳𑆲𑆮𑆳𑆑𑇀𑆫𑆴𑆠𑆴

𑆱𑆥𑆳𑆮𑆴𑆨𑆪𑆾𑆁𑆲𑇀𑆫𑆳𑆁𑆮𑆼𑆥𑆫𑆳𑆲𑇀𑆫𑆵𑆁𑆱𑆫𑆬𑆷

𑆨𑆷𑆥𑆠𑇀𑆫𑆳𑆨𑆳𑇆 𑇑𑇘 𑇆 𑆩𑆑𑆳𑆫𑆬𑆷𑆠𑆴𑆠𑆴

𑆨𑆲𑇀𑆫𑆥𑆤𑆵𑆁𑆮𑆴𑆠𑆲𑇀𑆫𑆵𑆁𑆮𑆴𑆱𑆨𑆳𑆬𑆼

𑆲𑆨𑆵𑆩𑆑𑆳𑇆 𑆥𑆲𑆑𑇀𑆫𑆵𑆁𑆩𑆲𑆑𑆵

𑇑𑇘

व[illegible]भी ढ्रां मइरा स्त्रीं सर्वलोकप्रयत्ना
मी ॥ ७३ ॥ काल काल क्षपउ डिं ना
नां विउ त्रउं ह्र उउ डिं कल पि ॥
कल पिर धुं ज्ञ क भेड भे का ह्रूं की
[illegible] रा स्त्रीं सर्वलोकप्रयत्नामी ॥ ७४ ॥ नि
भेषउ ह्रू ति कल ह्म क धु लवा ह्मि
कं काल क्ष पं भ[illegible]मीभी ॥ लिक ह्म
वा क्क लय ज्ञी वि यि ह्रं ह्रं काल रा
स्त्रीं सर्वलोकप्रयत्नामी ॥ ७५ ॥ भ्र क्र उप
ग॰ क द्व य ना क उ स्त्रीं भव ह्म रा फि घु रा
भु॰ भ ज्ञ उ रा ह्ल भी ॥ भ[illegible] कु उं काल क
३२ लां धु मि ह्रुं क ल ह्ल रा स्त्रीं सर्वलोकप्र

धूपयामि ॥ १० ॥ ह्रूँ ह्रौं भ्रां क्षि
द्रुस्रमारा भतिचा स्रा गाक्षि मि ह्रूं
गावाह्व ॥ यह्नं पं सीं परभ्राउं द
श्रीभगाक्षिगाल्लीं ड्रं वयंश्र धूपयामि ২২
घनाहूं ड्रं क्षिह्र भायां पर ग्लं वाग्री
गाभ्रं कभति ह्रां धूपयामि ॥ ह्रिं कें
भ्रं विह्रय यक्षत्र यज्ञां गालां ग
ग्लीं ड्रं वयंश्र धूपयामि ॥ ११ ॥ कह्रं
क्षिह्रं कामि ह्रां यथागं धूकमय
ड्रां क्षिह्र ज्ञं ऐं: श्रह्ठ धायामि ॥ कदाड्री
ड्रं कार श्रीउमक्षिं डाकहरा ग्लीं म
गं धूपयामि ॥ १२ ॥ वज्रं पगं कव

रा०
मु०
३५

मारङ्भाज्ञाद्वारिपालयत्रीमारङ्
गङ्गीमरङ्श्रपूपत्राभा ॥ ३३ ॥ ग
णाश्रुंगीगणाविभांड्रिणीय पोलसू
रूस्टूंठीभऊपांकरालाभा ॥ उभङ्ग
गीधरभूभाममांज्ञि उभङ्गीयाहि
मरङ्भूपत्राभा ॥ ३७ ॥ यांवंमभा
ऊंगकिगायंडींऊंगा ङ्ग्रक्षयर्हि
मेभूकुउभा ॥ क्षेत्रिविश्वयः पुङ्मड्डी
मभाकाम्लूक्षिगङ्गीमरङ्ह्रांभूपत्रा
भा ॥ ३· ॥ विक्ष्ञःसिवभूगाङ्पहे
मभोरंमक्लाक्लकेडेणाउक्लाविडंय
ग ॥ उड्ढ्रभ्रवेठणाउंगन्नयडीपक्ष

[illegible] नमः ॥ ३० ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] नमः ॥ ३१ ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

३७

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

विष्णुरुद्रैः पञ्चभिर्ब्रह्मविष्णुरुद्रैः [illegible]

[illegible] राज्ञी समस्तभूपपूजिताः ॥ ३३ ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible] राज्ञी समस्तभूप[illegible]

पूजिता ॥ ३४ ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible] राज्ञी समस्तभूपपूजिता ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

रा० [illegible] राज्ञी समस्तभूपपूजि[illegible]

[illegible]

[illegible]

॰ष्ठांसिसंकुः पोलभुवं सेष्ठव
उगूष्ठपाः ॥ श्रीउंजनस्ताविरेउगाथ
वं॰ ह्रींगामगास्त्रीं मरुं धूपयत्राः ॥
५७ ॥ कलोढिङ्डयासवकंमगाभाक्ष
लाभयोगोठरक्षुउेणगाश्च ॥ कक्षु
मक्षुगामयद्वीउभगं ह्वेरुष्ठग।
स्त्रीमरुंस्ब धूपयत्राः ॥ ५८ ॥ सग।
क्षिभायांभदभाष्कलड्डीक्षिह्रादा
भुक्तंकंभक्षिहेगक्षपाभो ॥ सउक्षु
गं॰ हंउंरठउक्षुलड्डीविह्राशिरास्त्रीं
श्रु॰ मरुं धूपयत्राः ॥ ५९ ॥ यक्षुमयेवि
३७ क्षुउंक्षिहक्षपांमाक्षिभदगंहृप

मश्रीगस्तुः ॥ ह्रागभभंक्त इभङ्कज्ञ
भंत्रीपङ्कलगस्लीमत ~ पूपञा: । ५१
मुँउम्प्वैँ नाम्रुमा ~ ँभभकांपठ्ठिम्
~ँउगाभिं कुल्लिउगाभा ॥ गण्यङ्क
ड्रांवश्वभद्भिगीकिं भुंवभ्नगस्लीम
त ~ पूपञा: ॥ ०१ ॥ स्लेंह्रुकेमाग्न
मयत्रीभभकंपिरुश्वरुपउिमश्व
लुङ्क ~ भा ॥ रूड्ढांपवीश्चपउीक्रुम
यंत्रींद्रिपभगस्लीमत ~ श्वपपञा: । ५२
यपिप्तुयाभुभ्विउँगैपभीमधूरिङ
यामालयंत्रीरु ~ त ॥ पक्वांशृंवि
क्रुभभ्रुंपगांद्वंभाजिगस्लीमत

॰ भूयज्ञाः ॥ १३ ॥ गगनाङ्गणदृक्करं
डम्बरूपं भुजङ्गमयज्ञोपवीतं हरसा ड।
स्यायसं ॥ ॰कुलं भुजङ्गकवलि
युक्तां मातृदत्तश्रीमत ॰ भूयज्ञाः ॥
१७ ॥ तनुतां तनुभ्रान्तिमतां विनाति
वाङ्मं विनाशात्विमथवेमहत्ले ॥ श्री॰
यमात्रिपात्रत्रकरिञ्जिडानि डनीयता
श्रीमत ॰ भूयज्ञाः ॥ १८ ॥ अचं यद
डम्भ्रमयानिरुद्धरूपं हारं भूमिष्ट ह
ग. स्मन्न हमेव ॥ उत्कुमयडाविमयि
मु. डरूपां वामचरा श्रीमत ॰ भूयज्ञाः
म. १० ॥ कालं कालं गगनाडं मन्दक्तं

ओं भक्तार्त्तिवभव ॥ कामंकामेश्वम
विश्वामानीतां हं मातृकायै ह्लीं नमः
भूपज्ञाः ॥ ७२ ॥ मरत्त्राहिडंयिहिडं
हैवमहूययघामस्त्राडिशियांभम
भूमा ॥ उक्षिम्भूडंभ्भारिडंवेयस्ले
क्षुंम्भाडराह्लीनमः भूपज्ञाः ॥ ७३
मपऊच्छूमष्टउः पाह्वउज्ञाष्टरत्र
मकाह्नूव भ्भारपामभा ॥ मरारि
मद्धरमंयद्धमंउक्षिरह्रूह्लीनमः
ड्रूम्रयेभ ॥ ७४ ॥ भिवः भक्षिद्यास्म
मरापगंडुंमभाकः भ्रूरााडंी डुवरारि
विस्राः ॥ भफद्धऊंमामयभफगाडिं

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

भक्तैर्भक्तैः प्रणम्य सः किं च वेद्यः
मुक्ताफलविभूषितिस्पर्शीमविद्युति
क्षीवः प्रमूर्च्छामि मौलिमिमूर्धमान्य
मा ॥ ९ ॥ उत्कीर्णपाशापिनाकवा
णे त्रिशूलडिण्डिमडमरुशङ्खा
कार्यं कामाय मन्त्र भासिपराङ्गी क्षयस्त
क्षयः सकलं सुयामः ॥ १० ॥ उमाचि
वलं सुप्रभासुप्तलक्ष्मी वैराग्यभीकला ।
कलेश्वराञ्छुभा ॥ राज्ञी सङ्गतां ह्याप
क्षयां परां कुक्षयस्त क्षयः सकलं सु
यामः ॥ ११ ॥ ॥ इति श्री ... 
... समाप्तम् ॥